[ISSN : 2348-2605]

अन्तर्राष्ट्रीय हिन्दी एवं सामाजिक विज्ञान शोध पत्रिका

(त्रैमासिक हिन्दी एवं सामाजिक विज्ञान पत्रिका)

www.gejournal.net

E-mail: hindires@gmail.com

अन्तर्राष्ट्रीय हिन्दी एवं सामाजिक विज्ञान
शोध पत्रिका
(त्रैमासिक हिन्दी एवं सामाजिक विज्ञान पत्रिका)

वैदिक संस्कृति के परिप्रेक्ष्य में आर्यो की उत्पत्ति एवं भारत के नवजागरण में योगदान

डॉ शिवा धमेजा
पूर्व प्रवक्ता,
महर्षि दयानन्द सरस्वती विश्वविद्यालय, अजमेर,भारत
एवम्
बृजेश कुमार
शोधार्थी

वैदिक संस्कृति, भारत की पुरातन संस्कृति है। इस संस्कृति के कारण ही भारत, संसार का गुरू कहलाता था। वेद भारतीय वांङमय व संस्कृति की अनुपम मणि मंजूषा है एवं वैदिक धर्म ही सत्य सनातन तथा शाश्वत धर्म है। सृष्टि की रहस्यमयी प्रक्रिया की व्याख्या वेद की नानाविधाओं के रूप में उपलब्ध होती है। भारतवर्ष मैं रहने वाली सर्वप्रथम जाति आर्य थी और आर्यों की अपनी संस्कृति भी, वैदिक संस्कृति ही थी। प्रस्तुत लेख द्वारा आर्यों की आदिभूमि, सिद्धान्तों ,मान्यताओं ,नियमों एवम् भारत के नवजागरण हेतु आर्यों के योगदान पर प्रकाश डाला गया है। प्रस्तुत आलेख को सृष्टि की समकालीन पुस्तक ऋग्वेद सहित मनुस्मृति, वाल्मीकि रामायण, महाभारत, वशिष्ट स्मृति, विदुरनीति, भगवद्गीता, चाणक्यनीति,अमरकोष,कौटिल्यकृत अर्थशास्त्र,पंचतन्त्र, धम्म पद, एवं पाणिनी सूत्र द्वारा सन्दर्भित किया गया है।

मनुष्य और उसकी सभ्यता के बारे में सबसे प्राचीन इतिहास वैदिक संस्कृति की देन है , जिसमें ऋषियों द्धारा मानव समाज को ब्यवस्थित तरीके से चलाने के लिये मर्यादित आचरण की ब्यवस्था दी गयी, जबकि आज के युग में मर्यादा का सर्वथा अभाव है, बावजूद इसके कालान्तर से आज तक वैदिक-संस्कृति ने अपने अस्तित्व को बनाये रखा है।

वैदिक संस्कृति आज भी उतनी ही सशक्त,सुव्यवस्थित,सुसंगठित और अनुशासित है,जितनी कि सृष्टि के उदय के समय और यही प्रमुख कारण रहा है कि वैदिक-संस्कृति को विश्वपटल पर आज भी सम्मानित दृष्टि से देखा जाता है परन्तु आज के भौतिकतावादी युग में,हम इस ब्यवस्था से

विमुख होते जा रहे हैं क्योंकि आज का जन-साधारण उन यम-नियमों का पालन करने में स्वयं बाधक बनता जा रहा है।1

वैदिक-संस्कृति अपनाने वाले आर्य युग-युगान्तर से श्रेष्ठ के पद पर सुशोभित हैं अर्थात् इतने लम्बे अन्तराल के उपरान्त भी उन्होंनें अपना अस्तित्व नहीं खोया है,बल्कि उसे संजोये रखा है। प्रत्येक भारतवासी को ऐसी महान,विलक्षण और आत्मकल्याण करने वाली संस्कृति पर गर्व होना चाहिये और इसे अपनाना चाहिये क्योंकि यही सभी की मूल संस्कृति है।2

आर्य समस्त हिन्दुओं तथा उनके मनुकुलीय पूर्वजों का वैदिक सम्बोधन है। इसका सरलार्थ है श्रेष्ठ अथवा कुलीन। आर्य शब्द का एक अर्थ प्रगतिशील भी है। भारतीय आर्यों का मूल धर्म ऋग्वेद में अभिव्यक्त है। आर्यों का प्राचीनतम साहित्य वेद भाषा काव्य और चितंन सभी दृष्टियों से महत्वपूर्ण है।

आर्यों के रहने के कारण भारत देश का प्राचीन नाम आर्यावर्त था। प्रारम्भिक आर्य संस्कृति में विद्या, साहित्य और कला का ऊँचा स्थान है।

(अमरकोष 7/3 महाकुलीनार्यसभ्यसज्जनसाधवः)

महर्षि दयानन्द सरस्वती ने कहा है "जो श्रेष्ठ स्वभाव, धर्मात्मा, परोपकारी, सत्य, विद्या आदि गुणयुक्त हैं और आर्यावर्त देश में रहने वाले हैं उनको आर्य कहते हैं।" आर्यावर्त की अवधि मनुस्मृति के अनुसार, उत्तर में हिमालय, दक्षिण में विन्ध्याचल पूर्व और पश्चिम में समुद[a]। हिमालय की मध्यरेखा से दक्षिण और पहाडों के भीतर और जितने देश हैं,उन सबको आर्यावर्त कहते हैं। यह आर्यावर्त देव अर्थात विद्वानों ने बसाया। आर्यजनों के निवास करने से आर्यावर्त कहाया है।3

प्राचीन भारतीय जैन, बौद्ध और हिन्दू ग्रन्थों के अनुसार आर्य कोई जाति नहीं बल्कि यह विशेषण था। आर्य शब्द का प्रयोग महाकुल, कुलीन, सभ्य, सज्जन, साधु, जाति के लिए पाया जाता है। आर्य एक विशेषधारा को मानने वालों का समूह जिनमें श्वेत, पित्त,रक्त,श्याम और अश्वेत रंग के सभी लोग शामिल थे। इनका आगमन आज से 4500 साल पहले 2500, ईसा पूर्व भारत में हुआ।4

स्वामी दयानन्द सरस्वती ने तिब्बत को आर्यों का मूल निवास स्थान माना है। यह वर्णन इनकी पुस्तक सत्यार्थ प्रकाश एवं इण्डियन हिस्टोरिकल ट्रेडिशन में मिलता है।5

ऋग्वेद के अनुसार

' विजानह्याय्यान्ये च दस्यवः' अथार्त् श्रेष्ठों का नाम, आर्य , विद्वानों का देव और दुष्टों का अभिप्राय दस्यु है।

वेद मंत्रों में सत्य, अहिंसा, पवित्रता आदि गुणों को धारण करने वाले को आर्य कहा गया है।

संस्कृत साहित्य में आदरणीय के अर्थ में 'आर्य' शब्द का प्रयोग किया गया है। सायणाचार्य ने अपने ऋग्भाष्य में आर्य का अर्थ विज्ञ, यज्ञ का अनुष्ठाता, विज्ञस्तोता, विद्वान, आदरणीय अथवा सर्वत्र गंतव्य, उत्तमवण, मनु कर्मयुक्त और कर्मानुष्ठान से श्रेष्ठ आदि किया है।

नैतिक रूप से प्रकृत आचरण करने वाले को 'आर्य' कहा गया है।

कर्तव्य माचनरन् कार्यमकर्तव्यमनाचरन्

तिष्ठति प्रकृताचारे स आर्य इति उच्यते।

नैतिक अर्थों में आर्य का प्रयोग, महाकुल,कुलीन,प्रगतिशील, सभ्य, सज्जन आदि के लिए किया जाता है। भारत के इतिहास में आर्य का नैतिक अर्थ अधिक प्रचलित है जिसके अनुसार किसी भी वर्ण अथवा जाति में श्रेष्ठता व सज्जता के आधार पर आर्य कहा जाने लगा।

संस्कृत भाषा के 'आर्य' शब्द की व्युत्पत्ति अति प्राचीनकाल में लिखे गए व्याकरण के ग्रन्थ अष्टाध्यायी की ऋग्तो धातु से है। विशुद्ध संस्कृत में इसका अर्थ, सम्मानीय, आदरणीय, उत्तम,श्रेष्ठ या गुणवान है। अष्टाध्यायी महर्षि आर्य पाणिनी द्वारा रचा हुआ व्याकरण का सर्वश्रेष्ठ ग्रन्थ है।6

यदा कदा 'अर्य' शब्द का प्रयोग सामान्य जनता द्वारा सम्बोधन के लिए किया जाता था। तत्पश्चात् जातिगत विभेदों के स्पष्टीकरण के प्रयोजन से आर्य वर्ण तथा शूद[a] वर्ण का प्रयोग किया जाने लगा।

सामाजिक अर्थ से, अभिप्राय सम्पूर्ण मानवजाति से है जिसके अन्तर्गत् वृत्ति व श्रम के आधार पर समाज को चार वर्णों में विभाजित कर दिया गया।

ऋग्संहिता में चारों वर्णों एवं कार्यों का उल्लेख निम्नानुसार किया गया हैμ

ब्रह्मणोंऽस्य मुखमासीद बाहू राजन्यः कृत्तः ।

ऊरू तदस्य यद्वैश्यः पदभ्यां शूदa ोऽजायत।। 10।। 90। 22।।

इस विराट पुरूष के मुँह से ब्राह्मण, बाहु से राजस्व (क्षत्रिय) , ऊरू (जंघा) से वैश्य, पद से (चरण) शूदa उत्पन्न हुआ।

इस अलंकारिक वाक्य का सरलार्थ निम्नानुसार हैμ

ब्रह्म अनन्त है। ब्रह्म के सद्विचार, सद्प्रवृत्तियाँ , आस्तिकता, जिस जनसमुदाय से अभिव्यक्त होती हैμ वे ब्राह्मण कहलाए।

शौर्य एवं तेज के अनुसार भरपूर जनसमुदाय को क्षत्रिय वर्ग में रखा गया। सं ासारिक आवश्यक क्रियाकलापों में संलग्न जनसमुदाय वैश्य वर्ग में सम्मिलित हुए एवं दस्तकारी, शिल्प, वस्त्रनिर्माण, सेवा क्षेत्रों में लगे कार्यों को करने वाले वर्ग को शूदa कहा गया।

वर्तमान में इन वर्गों को क्रमशः बौद्धिक, प्रशासकीय, व्यवसायिक तथा श्रमिक नाम से भी जाना जाता है। इन सभी वर्गों के मूल में तरलता विद्यमान थी। एक ही परिवार में कई वर्गों के लोग रहते एवं उनके मध्य विवाहादि संबध, भोजनपान इत्यादि होते थे।

'आर्य' शब्द के प्रमाण प्राचीनतम गन्थों में उपलब्ध होतें हैं।

सृष्टि की समकालीन पुस्तक ऋग्वेद में

कृण्वन्तो विश्वमार्यम ।'

अर्थ-'सारे संसार को आर्य बनाओ।

मनुस्मृति में

मद्द मांसा पराधेषु गाम्या पौराः न लिप्तकाः।'

आर्या ते च निमद्यन्ते सदार्यावर्त्त वासिनः।।'

अर्थ-'वे ग्राम व नगरवासी जो मद्द,मांस और अपराधों में लिप्त न हों तथा सदा से आर्यावर्त्त के निवासी हैं वे आर्य कहे जाते हैं।

बाल्मीकि रामायण में-'

सर्वदा मिगतः सदिशः समुद्र इव सिन्धुभिः ।'

आर्य सर्व समश्चौव व सदैवः प्रिय दर्शनः ।।-(बालकाण्ड)'

अर्थ-'जिस तरह नदियाँ समुद्र के पास जाती हैं उसी तरह जो सज्जनों के लिए सुलभ हैं वे आर्य हैं जो सब पर समदृष्टि रखते हैं, हमेशा प्रसन्नचित्त रहते हैं।

महाभारत में'

न वैर मुद्दीपयति प्रशान्त,न दर्पयासे हति नास्तिमेति।'

न दुगेतोपीति करोव्य कार्य,तमार्य शीलं परमाहुरार्या।।(उद्योग पर्व)'

अर्थ जो अकारण किसी से वैर नहीं करते तथा गरीब होने पर भी कुकर्म नहीं करते, उन शील पुरुषों को आर्य कहते हैं।

वशिष्ठ स्मृति में-'

कर्त्तव्यमाचरन काम कर्त्तव्यमाचरन ।'

तिष्ठति प्रकृताचारे यः स आर्य स्मृतः ।।'

अर्थ-जो रंग,रुप,स्वभाव,शिष्ठता,धर्म,कर्म,ज्ञान और आचार-विचार तथा शील-स्वभाव में श्रेष्ठ हो उसे आर्य कहते हैं।

निरुक्त में यास्काचार्य जी लिखते हैं-'

आर्य ईश्वर पुत्रः।'

अर्थ–'आर्य ईश्वर के पुत्र हैं।

विदुर नीति में-'

आर्य कर्मणि रज्यन्ते भूति कर्माणि कुर्वते ।'

हितं च नामा सूचन्ति पण्डिता भरतर्षभ ।।-(अध्याय १ श्लोक ३०)'

अर्थ-'भरत कुल भूषण! पण्डित जन्य जो श्रेष्ठ कर्मों में रुचि रखते हैं,उन्नति के कार्य करते हैं तथा भलाई करने वालों में दोष नहीं निकालते हैं वही आर्य हैं।

गीता में-

अनार्य जुष्टम स्वर्गम् कीर्ति करमर्जुन।'

(अध्याय २ श्लोक २)

अर्थ-हे अर्जुन तुझे इस असमय में यह अनार्यों का सा मोह किस हेतु प्राप्त हुआ क्योंकि न तो यह श्रेष्ठ पुरुषों द्वारा आचरित है और न स्वर्ग को देने वाला है तथा न कीर्ति की और ही ले जाने वाला है(यहां पर अर्जुन के अनार्यता के लक्षण दर्शाये हैं)।

चाणक्य नीति में-'

अभ्यासाद धार्यते विद्या कुले शीलेन धार्यते।'

गुणेन जायते त्वार्य,कोपो नेत्रेण गम्यते।।-(अध्याय ५ श्लोक ८)'

अर्थ-'सतत् अभ्यास से विद्या प्राप्त की जाती है,कुल-उत्तम गुण,कर्म,स्वभाव से स्थिर होता है,आर्य-श्रेष्ठ मनुष्य गुणों के द्वारा जाना जाता है।

नीतिकार के शब्दों में-'

'प्रायः कन्दुकपातेनोत्पतत्यार्यः पतन्नपि।'

तथा त्वनार्ष पतति मृत्पिण्ड पतनं यथा।।'

अर्थ-'आर्य पाप से लिप्त होने पर भी गेन्द के गिरने के समान शीघ्र ऊपर उठ जाता है अर्थात् पतन से अपने आपको बचा लेता है,अनार्य पतित होता है तो मिट्टी के ढेले के गिरने के समान फिर कभी नहीं उठता।

अमरकोष में

'महाकुलीनार्य सभ्य सज्जन साधवः।-(अध्याय२ श्लोक६ भाग३)'

अर्थरू-'जो आकृति,प्रकृति,सभ्यता,शिष्टता,धर्म,कर्म,विज्ञान,आचार,विचार तथा स्वभाव में सर्वश्रेष्ठ हो उसे आर्य कहते हैं।

कौटिल्य अर्थशास्त्र में-'

व्यवस्थितार्य मर्यादः कृतवर्णाश्रम स्थितिः।'

अर्थ-'आर्य मर्यादाओं को जो व्यवस्थित कर सके और वर्णाश्रम धर्म का स्थापन कर सके वही आर्य राज्याधिकारी है।

पंचतन्त्र में-'

'अहार्यत्वादनर्धत्वाद क्षयत्वाच्च सर्वदा।'

'अर्थ-'सब पदार्थों में उत्तम पदार्थ विद्या को ही कहते हैं।

धम्म पद में'

अरियत्पेवेदिते धम्मे सदा रमति पण्डितो।'

अर्थरू-'पण्डित जन सदा आर्यों के बतलाये धर्म में ही रमण करता है।

पाणिनि सूत्र में

आर्याे ब्राह्मण कुमारयोः।'

अर्थ-'ब्राह्मणों में आर्य ही श्रेष्ठ है।

प्रारम्भिक आर्य परिवार पितृसत्तात्मक था। गृहस्थ जीवन में पति पत्नि समान अधिकार रखते थे। पुत्र जन्म की कामना की जाती थी किन्तु कन्या की उपेक्षा भी नहीं की जाती थी। विवाह परस्पर निर्वाचन के अधिकार से सम्पूर्ण होता था।7 प्रारम्भिक आर्य संस्कृति के अन्तर्गत् विद्या, साहित्य एवं कला को सर्वाधिक महत्वपूर्ण स्थान प्रदान किया गया।

आर्यों का प्राचीनतम साहित्य वेद हैं। भाषा, काव्य एवं चिन्तन के आधार पर वेदों का सर्वोपरि स्थान है।8 आर्य विचारधाराएं भारतीय संस्कृति से प्रभावित है एवं वैदिक धर्म आर्यों का प्रमुख धर्म है। वैदिक धर्म की पुर्नस्थापना के लिए ही हिन्दु सुधारवादी आंदोलन आर्यसमाज की बुनियाद स्वामी दयानन्द ने डाली थी। ऋषि दयानन्द की वैचारिक विचारधारा ने सैंकडों हृदयों को वैदिक विचारों से ओत प्रोत कर दिया और देश में वेद गंगा बहने लगी।9 अनन्त शयनम् आयंगर के अनुसार,महर्षि दयानन्द सरस्वती राष्ट्र के पितामह थे। वे राष्ट्रीय प्रवृत्ति और स्वाधीनता के आन्दोलन के प्रथम प्रवर्तक थे । उन्होंनें स्वराज्य की प्रथम घोषणा करते हुए आधुनिक भारत का निर्माण किया । हिन्दू समाज का उद्धार करने मेँ आर्य समाज का बहुत बड़ा हाथ है।10 उनका कार्य है भारत को वेदों की ओर लौटाना। वे ईश्वर के अद्वैत तथा अजन्मा सत्ता को स्वीकार कर कृष्णादि के ईश्रत्व को न मानते हुए उन्हें महापुरूष की संज्ञा देते हैं तथा पौराणिक तथ्यों को पूर्णतया नकारते हैं। हिन्दु सुधार के उद्देश्य से आर्यसमाज द्वारा, आन्दोलन के रूप में अनेक क्रान्तिकारी परिवर्तन किये गए जिनके फलस्वरूप,भारत को श्रेष्ठ एवं प्रगतिशीलों का समाज बनाने के लिए,वेदों के अनुकूल चलने के लिए प्रेरित किया गया। सृष्टि की

समकालीन पुस्तक ऋग्वेद में, 'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्' अर्थात् 'समस्त संसार को आर्य बनाओ।' कहा गया हैμ11

आर्य जाति नहीं अपितु गुणवाचक व देशवाचक नाम है। राष्ट्रहित की प्रबल भावना से ओत प्रोत आर्यों के जीवन का उद्देश्य श्रेष्ठ बनना व बनाना है। संस्कृति का उद्देश्य मानव जीवन को सुन्दर बनाना होता है। मानव की जीवन पद्धति और घर्माधिष्ठित उस जीवन पद्धति का विकास भी उस संस्कृति शब्द से प्रकट होने वाला अर्थ है। इस अर्थ में राष्ट्र एवं उसकी संतति रूप, समाज का धर्म, इतिहास एवं परम्परा आदि सभी बातों का आधार संस्कृति है। इस संस्कृति का मूल वेदों में है। भाषा की उच्चता से समृद्ध विचारों से परिपक्व मानवीय मूल्यों का संरक्षक समाज रचना एवं जीवन पद्धति का समुचित मार्गदर्शन कराने वाला यह वैदिक वाङ्मय की असाधारण प्रणाली, उसके मूल स्वरूप में आज तक यथावत चली आ रहा है। ऐतिहासिक रूप में संसार के सभी विद्वान इस बात पर एकमत हैं कि वेद ही इस धरती की प्राचीनतम पुस्तक है और वे वेद जिस संस्कृति के मूल हैं, वह संस्कृति भी इस पृथ्वी पर सर्वप्रथम ही उदित हुई।12

संस्कृति एक व्यापक शब्द है। साधारणतया संस्कृति,भाषा, और धर्म तीनों का राष्ट्र निर्माण में सम्मिलित योगदान रहता है। भारतीय संस्कृति का मूलभूत स्वरूप, अध्यात्म प्रवीणता है। इतनी पुरातन संस्कृति के जो गुण हैं, वे नवीन संस्कृति में नहीं लाए जा सकते, इसलिए उनका संरक्षण व पालन, स्वतन्त्र भारत की स्वतन्त्रता का वास्तविक मूल्यांकन करने के लिए नितान्त आवश्यक हैं। अतएव भारतीय संस्कृति की रक्षा के लिए हमें हमेशा तत्पर रहना चाहिये।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूचि

1 चम्पतराय सादिक अल्लामा, दयानन्दसागर, स्वामी स्वतन्त्रानंद शोधसंस्थान, अबोहर, 2001, पृष्ठ 25

2 सिंह दिगम्बर, भारतीय संस्कृति, शिमला, पृष्ठ 5

3 सरस्वती दयानन्द, आर्योउद्देश्यरत्नमाला, पृष्ठ 7

4 शर्मा पंडित गिरिधर, वैदिक विज्ञान और भारतीय संस्कृति, बिहार राष्ट्र भाषा परिषद, पटना, 2000, पृष्ठ 4

5 आर्य रामप्रसाद, हिन्दू कौन आर्य कौन, हरिद्वार, 2003, पृष्ठ 1

6 श्री साठे राम, आर्य कौन थे, प्रकाशक इतिहास संकलन योजना

7 सरस्वती विद्यानन्द आर्यों का आदिदेश,

8 सरस्वती दयानन्द, सत्यार्थ प्रकाश, अजमेर,2005

9 श्री शर्मा शिवराम कृष्णवैदिकधर्मसत्यार्थप्रकाश,

10 श्री अरविन्द, महर्षि दयानन्द ,श्री अरविन्द चेतना समाज, दिल्ली, 1983,पृष्ठ 5

11 **Rolland Romain,** Dayanand and Arya Samaj , Delhi, 2006, Page-8

12 मधोक बलराज, हिन्दू राष्ट्र (एक ऐतिहासिक विवेचन),भारतीय साहित्य सदन, दिल्ली, 1958, प्रस्तावना